१२. संस्कृति

कहानी का सारांश

इस अध्याय में लेखक ने संस्कृति और सभ्यता के बीच अंतर स्पष्ट किया है। संस्कृति का अर्थ है – मनुष्य की रचनात्मक शक्ति, उसकी ज्ञान-पिपासा और नई खोज करने की क्षमता; जबकि सभ्यता उस संस्कृति का प्रतिफल है, अर्थात् खाने-पीने, पहनने, रहने-सहने और व्यवहार के विकसित तरीके। उदाहरणस्वरूप, आग और सुई-धागे का आविष्कार संस्कृति है, परंतु उनसे विकसित जीवन-पद्धति सभ्यता है।

लेखक बताते हैं कि संस्कृति केवल भौतिक खोजों तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें वैज्ञानिक जिज्ञासा, सत्य की तलाश और दूसरों के लिए त्याग की भावना भी शामिल है। न्यूटन, लेनिन, कार्ल मार्क्स और गौतम बुद्ध जैसे महापुरुषों की खोज, त्याग और मानव-कल्याण की प्रेरणा ही वास्तविक संस्कृति का परिचायक है। सभ्यता तभी सार्थक है जब वह संस्कृति के कल्याणकारी उद्देश्यों से जुड़ी हो; अन्यथा वह असभ्यता में बदल सकती है।

संदेश: संदेश यही है कि संस्कृति और सभ्यता एक-दूसरे से गहराई से जुड़ी हैं – संस्कृति मूल शक्ति है और सभ्यता उसका परिणाम। संस्कृति का स्थायी और श्रेष्ठ पक्ष वही है जो मानवता के कल्याण से संबंध रखता है।

शब्दार्थ

- **आध्यात्मिक** - परमात्मा या आत्मा से सम्बन्ध रखने वाला
- **साक्षात** - आँखों के सामने
- **आविष्कर्ता** - अविष्कार करने वाला
- **अनायास** - आसानी से
- **तृष्णा** - लोभ, प्यास
- **परिष्कृत** - सजाया हुआ
- **कदाचित** - कभी
- **निठल्ला** - बेकार, अकर्मण्य, बिना काम धंधे का
- **मिनिषियों** - विद्वानों, विचारशीलों
- **शीतोष्ण** - ठंडा और गरम
- **वशीभूत** - वश में होना
- **अवश्यंभावी** - अवश्य होने वाला, जिसका होना निश्चित हो
- **पेट की ज्वाला** - भूख
- **स्थूल** - मोटा
- **तथ्य** - सत्य
- **पुरस्कर्ता** - पुरस्कार देने वाला
- **ज्ञानेप्सा** - ज्ञान प्राप्त करने की लालसा
- **सर्वस्व** - स्वयं को सब कुछ
- **गमना गमन** - आना-जाना
- **प्रज्ञा** - बुद्धि
- **दलबंदी** - दल की बंदी
- **अविभाज्य** - जो बाँटा ना जा सके

www.onepointlearning.com

मुहावरे

- **निठल्ला बैठना –** बिना किसी काम के रहना।
- **कट मरना –** आपस में झगड़ना या प्राण देना।
- **कूड़े-करकट का ढेर –** बेकार या महत्वहीन वस्तुओं का समूह।
- **कौर छोड़ना / मुँह का कौर छोड़ना –** अपनी वस्तु या अधिकार दूसरों के लिए त्याग देना।

प्रश्न - अभ्यास

1. **लेखक की दृष्टि में 'सभ्यता' और 'संस्कृति' की सही समझ अब तक क्यों नहीं बन पाई है?**

   उत्तर: लेखक के अनुसार, 'सभ्यता' और 'संस्कृति' को अक्सर एक ही चीज़ या दो अलग-अलग वस्तुएँ मानकर भ्रमित किया जाता है। इन शब्दों के साथ 'भौतिक' और 'आध्यात्मिक' जैसे विशेषणों का प्रयोग होने पर यह भ्रम और बढ़ जाता है, जिससे इनका सही अर्थ समझना मुश्किल हो जाता है। लोग इन शब्दों का उपयोग बहुत अधिक करते हैं, लेकिन इनके गहरे अर्थ को कम ही समझ पाते हैं।

2. **आग की खोज एक बहुत बड़ी खोज क्यों मानी जाती है? इस खोज के पीछे रही प्रेरणा के मुख्य स्रोत क्या रहे होंगे?**

   उत्तर: आग की खोज को एक बहुत बड़ी खोज इसलिए माना जाता है क्योंकि इसने मानव जीवन में एक बड़ा बदलाव लाया। जिस व्यक्ति ने सबसे पहले आग का आविष्कार किया, वह बहुत बड़ा आविष्कारक था। यह खोज सिर्फ एक आविष्कार नहीं थी, बल्कि यह मानव संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनी, जिसने लोगों के जीवन को पूरी तरह से बदल दिया।

   इस खोज के पीछे मुख्य प्रेरणा का स्रोत पेट की ज्वाला या भूख रही होगी। जब आदिमानव को ठंड लगती थी या उसे खाना पकाने की आवश्यकता महसूस होती थी, तो उसे आग की ज़रूरत पड़ी होगी।

3. **वास्तविक अर्थों में 'संस्कृत व्यक्ति' किसे कहा जा सकता है?**

   उत्तर: वास्तविक अर्थों में 'संस्कृत व्यक्ति' उस व्यक्ति को कहा जा सकता है जिसकी बुद्धि या विवेक ने किसी नए तथ्य की खोज की हो। ऐसा व्यक्ति अपनी सहज योग्यता और प्रेरणा के बल पर ज्ञान की खोज करता है, न कि किसी भौतिक आवश्यकता के कारण। उदाहरण के लिए, न्यूटन जिसने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का आविष्कार किया, वह एक संस्कृत मानव था।

4. **न्यूटन को संस्कृत मानव कहने के पीछे कौन से तर्क दिए गए हैं? न्यूटन द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों एवं ज्ञान की कई दूसरी बारीकियों को जानने वाले लोग भी न्यूटन की तरह संस्कृत नहीं कहला सकते, क्यों?**

   उत्तर: न्यूटन को संस्कृत मानव इसलिए कहा गया क्योंकि उन्होंने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का आविष्कार किया। उन्होंने यह खोज किसी बाहरी भौतिक प्रेरणा से नहीं, बल्कि अपनी सहज ज्ञानेप्सा (ज्ञान की इच्छा) के कारण की।

न्यूटन द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों और ज्ञान की बारीकियों को जानने वाले लोग भी न्यूटन की तरह संस्कृत नहीं कहला सकते क्योंकि वे केवल न्यूटन की सभ्यता (उसका आविष्कार) का उपयोग कर रहे हैं। उन्होंने स्वयं उस ज्ञान की खोज नहीं की। वे भले ही न्यूटन से अधिक सभ्य हों, लेकिन न्यूटन जितने संस्कृत नहीं हैं क्योंकि उनमें वह मौलिक रचनात्मकता और खोज की शक्ति नहीं है जो न्यूटन में थी।

5. **किन महत्त्वपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सुई-धागे का आविष्कार हुआ होगा?**

उत्तर: सुई-धागे का आविष्कार मुख्य रूप से दो महत्त्वपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हुआ होगा:

- **शीतोष्ण (ठंड) से बचाव:** ठंडे मौसम से बचने के लिए जानवरों की खाल या अन्य वस्तुओं को सिलकर पहनने योग्य बनाने की आवश्यकता महसूस हुई होगी।
- **शरीर को सजाने की प्रवृत्ति:** मानव में हमेशा से खुद को सुंदर दिखाने की प्रवृत्ति रही है, और सुई-धागे का इस्तेमाल कपड़ों और आभूषणों को बनाने में हुआ होगा।

6. **"मानव संस्कृति एक अविभाज्य वस्तु है।" किन्हीं दो प्रसंगों का उल्लेख कीजिए जब-**

(क) मानव संस्कृति को विभाजित करने की चेष्टाएँ की गईं।

उत्तर: मानव संस्कृति को विभाजित करने की चेष्टाएँ अक्सर तब होती हैं जब लोग इसे दलबंदी और स्वार्थ के आधार पर देखते हैं। जब लोग किसी आविष्कार या खोज को अपना एकमात्र अधिकार मानते हैं और उसकी रक्षा के लिए गुट बनाते हैं, तो संस्कृति को बाँटने की कोशिश होती है। उदाहरण के लिए, धर्म, जाति या राष्ट्र के नाम पर होने वाले संघर्ष, जहाँ लोग अपनी संस्कृति को दूसरों से अलग और श्रेष्ठ मानते हैं।

(ख) जब मानव संस्कृति ने अपने एक होने का प्रमाण दिया।

उत्तर: मानव संस्कृति ने अपने एक होने का प्रमाण तब दिया जब महामानवों ने प्रज्ञा और मैत्री भाव से काम किया। जब सिद्धार्थ ने तृष्णा से पीड़ित मानवता को सुख दिलाने के लिए अपना घर छोड़ा, या जब कार्ल मार्क्स ने मजदूरों के लिए दुःख सहा, तो उन्होंने किसी एक समूह के लिए नहीं, बल्कि संपूर्ण मानवता के लिए काम किया। ऐसे कार्य यह दर्शाते हैं कि कल्याण की भावना किसी विभाजन को नहीं मानती और संस्कृति एक अविभाज्य वस्तु है।

7. **आशय स्पष्ट कीजिए-**

(क) मानव की जो योग्यता उससे आत्म-विनाश के साधनों का आविष्कार कराती है, हम उसे उसकी संस्कृति कहें या असंस्कृति?

उत्तर: लेखक इस प्रश्न के माध्यम से यह स्पष्ट करना चाहता है कि यदि किसी व्यक्ति की योग्यता उसे आत्म-विनाश के साधन बनाने की ओर ले जाती है, तो वह संस्कृति नहीं, बल्कि असंस्कृति है। लेखक के अनुसार, वास्तविक संस्कृति हमेशा कल्याण और सृजन की भावना पर आधारित होती है। जो योग्यता विनाश को जन्म देती है, वह मानव की असभ्यता का ही प्रमाण है। ऐसी 'संस्कृति' का परिणाम अंततः असभ्यता और सर्वनाश ही होगा।

www.onepointlearning.com

रचना और अभिव्यक्ति

8. आप सभ्यता और संस्कृति के बारे में क्या सोचते हैं?

उत्तर: लेखक ने संस्कृति को किसी व्यक्ति की मौलिक खोज की शक्ति और सृजनात्मकता माना है, जबकि सभ्यता को उस खोज का परिणाम माना है। मैं इस दृष्टिकोण से सहमत हूँ। मेरे विचार से, संस्कृति वह विचारधारा, प्रेरणा या सोच है जो हमें कुछ नया करने या रचने के लिए प्रेरित करती है। यह अमूर्त होती है, जिसे महसूस किया जा सकता है। इसके विपरीत, सभ्यता उस संस्कृति का ठोस रूप या उत्पाद है, जिसे देखा या इस्तेमाल किया जा सकता है। उदाहरण के लिए:

- संस्कृति वह विचार है जो एक इंजीनियर को नई तकनीक विकसित करने की प्रेरणा देता है।
- सभ्यता वह स्मार्टफोन है जो उस विचार के परिणामस्वरूप बनता है।
- संस्कृति हमेशा कल्याण और प्रगति की भावना से जुड़ी होती है। जब यह भावना समाप्त हो जाती है, तो वह संस्कृति नहीं, बल्कि असंस्कृति बन जाती है, और उसका परिणाम असभ्यता होता है। इसलिए, सभ्यता और संस्कृति दोनों का अस्तित्व एक-दूसरे पर निर्भर करता है, लेकिन संस्कृति ही सभ्यता को जन्म देती है।

भाषा- अध्ययन

9. निम्नलिखित सामासिक पदों का विग्रह करके समास का भेद भी लिखिए-

- **गलत-सलत**
  - → **विग्रह**: गलत और सलत
  - → **समास का भेद**: द्वंद्व समास (जब दोनों पद प्रधान होते हैं)
- **आत्म-विनाश**
  - → **विग्रह**: आत्मा का विनाश
  - → **समास का भेद**: तत्पुरुष समास (जब दूसरा पद प्रधान होता है, और कारक चिह्न का लोप होता है)
- **महामानव**
  - → **विग्रह**: महान है जो मानव
  - → **समास का भेद**: कर्मधारय समास (जब एक पद विशेषण और दूसरा विशेष्य होता है)
- **पददलित**
  - → **विग्रह**: पद से दलित
  - → **समास का भेद**: तत्पुरुष समास (यहाँ 'से' कारक चिह्न का लोप है)
- **हिंदू-मुस्लिम**
  - → **विग्रह**: हिंदू और मुस्लिम
  - → **समास का भेद**: द्वंद्व समास (दोनों पद प्रधान हैं)

- **यथोचित**
  - → **विग्रह**: जो उचित है
  - → **समास का भेद**: अव्ययीभाव समास (जब पहला पद अव्यय होता है और पूरा पद क्रियाविशेषण का काम करता है)
- **सप्तर्षि**
  - → **विग्रह**: सात ऋषियों का समूह
  - → **समास का भेद**: द्विगु समास (जब पहला पद संख्यावाची होता है)
- **सुलोंचना**
  - → **विग्रह**: सुंदर हैं लोचन जिसके (वह)
  - → **समास का भेद**: बहुव्रीहि समास (जब दोनों पद मिलकर किसी तीसरे पद की ओर संकेत करते हैं)

www.onepointlearning.com